'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2016-18
WPP Licence No.- U(C)-101/2017-18
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 15.05.2017
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन – जस्टिस पब्लिकेशंस, टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन : 23354841–42

Website : www.uditraj.com E-mail: parisangh1997@gmail.com

● वर्ष : 20 ● अंक 12 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● कुल पृष्ठ संख्या 8 ● 1 से 15 मई, 2017

15 मई, 2017 को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित लेख

गन्दगी क्यों नहीं जाती

गत 4 मई को 434 शहरों का स्वच्छ सर्वेक्षण के बारे में रिपोर्ट का खुलासा हुआ जिसमे इंदौर, जो मध्य प्रदेश में है, को सबसे ज्यादा स्वच्छ पाया गया और दूसरे स्थान पर भोपाल रहा। यूपी में अगर वाराणसी को छोड़ दे तो सबसे निचले पायदान के 50 शहरों में से आधे शहर यूपी के ही है। देश के 10 सबसे गंदे शहरों में 4 शहर यूपी के ही थे। वाराणसी ही था जिसने टॉप 50 में जगह बनायीं। ऐसा इसलिए किया गया ताकि पता लग सके कि कहाँ–कहाँ पर स्वच्छ भारत मिशन पर अच्छा काम किया जा रहा है। जिन आधार पर सर्वेक्षण किया गया था घर–घर से कूड़ा एकत्रित करने सहित ठोस कचरे का प्रबंधन, प्रक्रिया और निपटान, खुले में शौच से मुक्ति की स्थिति में कुल 2000 अंकों का 45 प्रतिशत यानी 900 अंक, नागरिकों की प्रतिक्रिया 30 प्रतिशत यानी कुल अंकों में से 600 अंक और स्वतंत्र अवलोकन 25 प्रतिशत यानी 500 अंक । इसमें निगम के स्वयं के मूल्यांकन को ज्यादा अंक दिया गया है। सर्वेक्षणकर्ताओं ने 17,500 स्थान, 2,582 कम्युनिटी हब, 2560 शौचालय और 2560 व्यावसायिक केंद्र चुने।

2 अक्टूबर 2015 में प्रधानमंत्री जी ने इंडिया गेट से लोगों को आह्वाहन किया कि देश को स्वच्छ बनाया जाये। अभियान तेजी से शुरु हुआ। क्या नेता, व्यापारी और अधिकारी झाड़ू लेकर के नाली–नाले और सड़क साफ करने पर उतरे। एक बात इसमें बहुत महत्वपूर्ण हुई कि जो लोग इसे गन्दा काम कहते थे उनकी सोंच में सकारात्मक परिवर्तन आया। हमारी शिक्षा व्यवस्था अगर ठीक होती तो प्रधानमंत्री जी को यह आह्वाहन करने की आवश्यकता न पड़ती । दूसरा, जिन्होंने लम्बे समय तक शासन किया यदि उन्होंने यह सोच लिया होता तो ऐसी वीभत्स स्थिति न होती। जो अपने को बुद्धिजीवी कहते है जैसे अध्यापक, छात्र, पत्रकार, लेखक एवं शोधकर्ता जिनकी संख्या लाखों–करोड़ों में होगी, यदि वास्तव में बुद्धजीवी होते तो गन्दगी न रह पाती। शिक्षा तो दी गयी लेकिन अच्छे अंक प्राप्त करके नौकरी या सम्मान के लिए। दिमाग एक बक्सा है और उसमे चाहे जितनी सूचना और आंकडे भरे जा सकते है और इम्तिहान में उन्हें जवाब के रूप में लिख दिया जाता है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि ये मानवतावादी, श्रम की महत्ता और अन्य जो एक शिक्षित होने के गुण है वह इनमे पाए ही जाये। मीडिया के लोग दूसरे की नुक्ताचीनी खोजने में सबसे आगे होते है अगर वही चाहें होते तो गन्दगी को दूर किया जा सकता था। लगभग सभी लोग अखबार को पढ़ते है और टेलीविजन को देखते है जो मानसिकता मीडिया बनाना चाहती है वह काफी हद तक हो भी जाता है।

वास्तव में गन्दगी का सबसे बड़ा कारण जाति व्यवस्था है। हजारों जातियों में से जब एक ही जाति की जिम्मेदारी गन्दगी सफाई करने की हो तो यह संभव ही नहीं है कि देश को साफ– सुथरा रखा जा सके। इस कार्य को करने वाले लोगों को अछूत और नीच समझा गया और जब यह हुआ तो अन्य जाति के लोग अपमान और शर्म महसूस करने लगे अगर वह

www.aiparisangh.com
facebook.com/AIParisangh
98 99 766 443
@aiparisangh
parisangh1997@gmail.com

अपनी सफाई करते हैं तो। हालत इतना बद से बदतर है कि अपने घर का कूड़ा सामने की सड़क और रास्ते पर ही फेंक दिया जाता है। आम लोगों की अभी भी यह आदत है कि केले का छिलका, बेकार कागज, खाली बोतल या शीशी इत्यादि वहीँ छोड़ देते है। मानसिकता यह है कि सफाई करने वाला कोई और है और वह ही यह काम करेगा।

जब प्रधानमन्त्री जी के स्तर से इस बीमारी को खत्म करना है तो केवल प्रशासनिक स्तर के प्रयास से संभव नहीं है कुछ नेता मंत्री या अधिकारी कभी–कभार झाड़ू उठा भी लें तो चुनौती यह है कि समाज इस मुहिम में कैसे शामिल किया जाये। इसे पठन– पाठन का हिस्सा बनाया जाये। शिक्षा का मतलब यह भी समझ में आये कि जो सबसे ज्यादा स्वच्छ हो वह पढ़ा–लिखा या सबसे ज्यादा शिक्षित है। धनवान को भी समझाया जाये कि स्वच्छ वातावरण के लिए उसे विदेश में सैर करने और रहने के लिए जाना पड़ता है। वह भी इस कार्य को उतना ही महत्त्व दे जितना कि वह अपने व्यवसाय के लिए देता है। जो पुरुष्कार है जैसे कि पद्मश्री, पद्मभूषण या पद्मविभूषण ऐसे लोगों को भी नवाजे जाये, जिनका योगदान स्वच्छता में हो। स्कूल में बच्चों को सफाई करना सिखाया जाये जैसे कि अन्य देशों में होता है। जापान जैसे देश है जहाँ पर बच्चे जब दोपहर का भोजन करते हैं तो न केवल अपने बर्तन को साफ करते है बल्कि पूरी किचन और फर्श को भी साफ करते है। इस तरह से उनके स्वाभाव का एक हिस्सा बन जाता है और फिर इस कार्य को करने में अपमान महसूस करने का सवाल ही नहीं पैदा होता है।

जब हम दूसरे देशों में जाते है तो वहां की स्वच्छता देख कर चौंक जाते हैं और महसूस जरुर करते है कि काश हमारा देश भी ऐसा स्वच्छ होता। जैसे ही देश के एयरपोर्ट पर उतरते हैं उस स्वच्छता की याद आ जाती है जहाँ से हम आये होते हैं। कुछ देर के लिए विरक्ति और निराशा भी होती है लेकिन धीरे–धीरे माहौल के अनुरूप अपने को समायोजित कर लेते हैं। उत्तर–प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जी भी प्रयास में लगे हैं द्य देखना है कि कब तक यह मिशन पूरा होता है। हम निराशावादी नहीं है लेकिन जो बात जाति व्यवस्था से जुडी है वह आशावादी बनने नहीं देती। निकट भविष्य में भी जाति समाप्त होने वाली लगती नहीं तो यह मानसिकता कहाँ से खत्म होगी कि गन्दगी साफ करना अपमान नहीं सम्मान की बात है। हालत यहाँ तक है कि सफाई के काम में जो तथाकथित सवर्ण और पिछड़े हैं नौकरी तो करते हैं लेकिन प्रायः काम किसी सफाई करने वाली जाति वाले व्यक्ति को पकड़ कर उसी से करवाते है और अपने वेतन का एक हिस्सा का भुगतान करते है। कुछ जगहों पर जहाँ दबाव है वहां मजबूरन गन्दगी साफ करना पड़ता ही है। इस तरह से इस समस्या का समाधान प्रशासनिक स्तर पर ही नहीं बल्कि मानसिक और धार्मिक स्तर पर भी शुरुआत की जाये। तभी इस अभियान की पूर्ति होगी।

– डॉ. उदित राज

27-28 मई को परिसंघ का दो दिवसीय चिंतन शिविर शिमला में

27 एवं 28 मई, 2017 को अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ का दो दिवसीय चिंतन शिविर हिमाचल प्रदेश पंचायती राज ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, मशोबरा, शिमला में आयोजित किया जा रहा है। इस चिंतन शिविर में मुख्य रूप से समाज के बीच कैडर देने वाले प्रशिक्षक तैयार किए जाने हैं। इसके अलावा इसमें दलित समाज पर बढ़ रहे अत्याचार, निजी क्षेत्र व पदोन्नति में आरक्षण सहित अन्य दलित मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। प्रायः इस तरह के चिंतन शिविर दिल्ली में आयोजित किए जाते रहे है, जहां लोग चिंतन शिविर में भाग लेने के लिए आते हैं तो चार अन्य तरह के काम भी करने का सोचते हैं और कई बार तो पीक टाइम में ही निजी कार्य से बाहर चले जाते हैं। इस बार शिमला में करने का मुख्य उद्देश्य है कि लोग एकाग्रचित होकर उपरोक्त मुद्दों पर किए गए चिंतन को समझ सकेगें और अमल में लाने में सहायता मिलेगी। दूसरा, लोग गर्मी की छुट्टियों में किसी हिल स्टेशन पर जाना पसंद करते हैं। चिंतन शिविर में भाग लेने वालों के लिए दिल्ली से ए.सी. बस की व्यवस्था की गयी है, जो 26 मई की शाम को 9 बजे प्रस्थान करेगी और वहां 27 मई की सुबह पहुंचेगी। खाने व रात को ठहरने की व्यवस्था उपरोक्त स्थान पर की गयी है, उसके उपरांत 28 मई को सायं 9 बजे वहां से दिल्ली के लिए प्रस्थान करेगें। आने–जाने व ठहरने–खाने का खर्च प्रतिव्यक्ति लगभग 4 हजार रूपये का होता है, लेकिन भाग लेने वालों से सिर्फ 1,000/– (एक हजार रूपये) सहयोग राशि ली जा रही है। आप सभी से निवेदन है कि अपने साथ कुछ समर्पित साथियों को इसमें भाग लेने के लिए तैयार करें। चलने की सूचना अग्रिम में देने और अधिक जानकारी हेतु रा. सचिव, श्री परमेन्द्र – 9013869539, 8826180767 एवं दिल्ली परिसंघ के अध्यक्ष श्री सत्य नारायण – 9873988894 से सम्पर्क करें।

– डॉ. उदित राज, रा. अध्यक्ष

सभी छोटे-छोटे संगठन एकजुट हों : डॉ. उदित राज

13 मई, 2017 को निरंजन धर्मशाला, रायपुर, वी.आई.पी. रोड, पर छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मंडल आरक्षित वर्ग अधिकारी–कर्मचारी प्रांतीय कर्मचारी संघ का सम्मेलन व स्वाभिमान पत्रिका का विमोचन गरिमामयी समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय नंदकुमार साय, राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जन जाति आयोग, नई दिल्ली एवं माननीय डॉ. उदित राज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माननीय जी.आर. राणा, अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राज्य, अनुसूचित जन जाति आयोग, माननीय एस.के. सचदेवा, महासचिव – म. प्र. विद्युत मंडल आरक्षित वर्ग अधिकारी–कर्मचारी संघ उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत बाबा साहेब के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित अतिथियों के द्वारा किया गया। सर्वप्रथम संघ के माननीय अध्यक्ष एच.के. मेश्राम के द्वारा संगठन की गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में बताया गया एवं लंबित प्रमुख मांगें, जिसमें कंपनी में 2 एम.डी.

इन वर्गों का हो, स्थानांतरण पॉलिसी 6 जून 2015 कंपनी में लागू है एवं आउट सोर्सिंग एवं ठेकेदारी प्रथा पर रोक लगाकर नियमित भर्तियां की जाएं। इसके उपरांत विशेष अतिथि श्री जी.एस. राणा ने संबोधित करते हुए कहा कि आयोग हर संभव आप सभी की समस्या को सुलझाने का प्रयास करेगा।

डॉ. उदित राज जी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि चूंकि सारी योजनाएं एवं नीति केन्द्र सरकार से राज्य सरकार को निर्देशित की जाती हैं। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय ही सारे देश में लागू होता है। अतः हमें छोटे–छोटे संगठन बनाने के साथ–साथ अपनी सारी शक्ति नई दिल्ली में दिखानी चाहिए। साथ ही इन वर्गों को जो बहुसंख्यक हैं, सोसल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल कर हमारे विचारों एवं घटित घटनाओं को लोगों तक पहुंचाना होगा जो एक बहुत बड़ी क्रांति हो सकती है, किन्तु हमारे लोग इसका इस्तेमाल 10 प्रतिशत भी नहीं कर पा रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने अधिकारी–कर्मचारी को सिर्फ अपनी सुविधाओं के अतिरिक्त हमारे उन लोगों के लिए काम करने के लिए कहा जो बिना किसी रोजगार के बहुत ही अभाव की जिंदगी जीने को मजबूर हैं, एवं जिनके शोषण की घटना हमेशा घटती रहती है, उन्होंने कहा कि आज लोग बाबा साहेब के आरक्षण एवं उनके द्वारा प्रदान की गयी सभी सुविधा में तो लाभ लेना चाहते हैं, परन्तु लोग उनको धम्म का मार्ग एवं उनकी 22 प्रतिज्ञा एवं उनके अन्य महत्त्वपूर्ण विचारों को लोगों तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं या उन पर अमल नहीं कर पा रहे हैं। इस पर गंभीरता से सोचना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय नंद कुमार साय ने अपनी बातों की शुरुआत बहुत ही अच्छे संस्कृत के स्लोगन से किया तथा उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सहित अन्य उत्तर भारत के आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासियों का बहुत ज्यादा शोषण हो रहा है, इन शिकायतों को मैंने बड़ी गंभीरता से लिया है एवं इस पर मैंने त्वरित कार्यक्रम भी शुरू कर दिया है। उन्होने कहा कि मैंने पूरे भारत में दौरे की भी योजना बनायी है एवं खासकर आदिवासी बाहुल्य राज्यों में जाकर मैं इन लोगों की समस्याओं से अवगत होकर त्वरित कार्यवाही करने का प्रयास करूंगा। उन्होंने विद्युत संघ से इन वर्गों की समस्याओं के निवारण हेतु विद्युत कंपनी के अध्यक्ष को तलब करने की बात कही। अतः अंत में उन्होनें कार्यक्रम हेतु संघ को बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में पधारे म.प्र. विद्युत मंडल आरक्षित वर्ग कर्मचारी–अधिकारी श्री एस.के. सचदेवा जी ने म.प्र. में आरक्षण की स्थिति से अवगत कराया एवं उन्होंने कहा कि चूंकि म.प्र. का प्रकरण उच्चतम न्यायालय में लंबित है। अतः वहां अभी पदोन्नति में आरक्षण पर रोक है और कोई प्रमोशन नहीं हो रहे हैं। कार्यक्रम को संघ के संरक्षक श्री डब्ल्यू. आर. वानखेड़े, एस.के. बंजारा तथा संघ के अध्यक्ष श्री एच.के. ठाकुर ने भी संबोधित करते हुए सभी को सफल आयोजन हेतु बधाई एवं शुभकामनाएं दीं तथा एकजुट होकर अपनी मांगों हेतु संघर्ष करने का आवाहन किया। कार्यक्रम में जय भीम कल्चरल ग्रुप वालों ने अपनी प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया। अंत में कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन एवं धन्यवाद ज्ञापन महासचिव श्री बी.एल. आर्या ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री शशांक पुत्र श्री के.बी. बंसाढ़ और बिम्बिसार नागार्जुन ने किया।

संसद का अधिकार सुप्रीम कोर्ट ने छीना

नई दिल्ली, 12 मई 2017, अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज ने आज कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता हाई कोर्ट के न्यायधीश सी.एस. कर्णन के कार्य को छीन कर और छः महीने की सजा देकर संसद के अधिकार क्षेत्र का हनन किया। संविधान की धारा 214 और 124 में स्पष्ट है कि हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के जज को संसद ही अभियोग के माध्यम से हटा सकती है। पहले सुप्रीम कोर्ट ने स्वयं के निर्णय से जजों की नियुक्ति का अधिकार छीना और अब उनके हटाने का भी। इससे जो संविधान में न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका में संतुलन था वह बिगड़ा है। अगर जस्टिस कर्णन की गलती थी तो सुप्रीम कोर्ट जांच करके मामले को संसद भेजना चाहिये था और संसद ही अभियोग चलाकर जज को हटा सकती है। मान लेते हैं कि जस्टिस कर्णन ने गलती की लेकिन सुप्रीम कोर्ट को गलती नहीं करनी चाहिए थी।

डॉ. उदित राज ने आगे कहा कि सवाल केवल संसद के अधिकार छीनने तक का ही नहीं है बल्कि इससे देश में बहुत खतरनाक स्थिति पैदा हो सकती है। क्या देश सुप्रीम कोर्ट से ही चलेगा? सुप्रीम कोर्ट के इस कृत्य से एक बात और स्पष्ट हो गयी कि क्यों सरकार के द्वारा सुझाये गए मेमोरंडम ऑफ प्रोसीजर की शर्तों को नहीं मान रहे हैं। इस तरह से सुप्रीम कोर्ट विधायिका के अधिकार क्षेत्र को दिनों दिन छीनती जा रही है। अगर जस्टिस कर्णन का व्यवहार उचित नहीं है तो उसके लिए भी हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के कोलोजियम जिम्मेदार हैं। क्यों नहीं नियुक्ति करते समय आचरण को भलीभांति जांचा गया।

परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज ने कहा कि जज के आचरण के बारे में केवल संसद में चर्चा हो सकती है। जिस तरह से जस्टिस कर्णन के साथ हुआ, कल किसी और जज के साथ हो सकता है और इससे न्यायपालिका के स्वायत्ता खत्म होगी। अपराधिक मामले पर बिना कानून की सुनवाई की प्रक्रिया के बगैर सजा सुनाई नहीं जा सकती है। जैसा कि इस केस में हुआ है। सुप्रीम कोर्ट का हाई कोर्ट के जज पर अनुशासनात्मक कार्यवाही बनती ही नहीं। मान लिया जाये किसी जज ने गलत कार्य किया अगर उसे कानून की प्रक्रिया के द्वारा सजा न सुनाकर सीधे कार्यवाही की जाती है तो कभी भी कोई जज जेल भेजा जा सकता है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान में लिया है। जस्टिस सी. एस. कर्णन ने भ्रष्टाचार के जो आरोप जजों पर लगाये है डाक्टरी जांच के लिए भी जबरदस्ती नहीं किया जा सकता है जैसा कि इस केस में किया गया। यह कहना कि मीडिया में यह खबर न आये तो यहाँ सुप्रीम कोर्ट ने गलत किया।

– – –

परिसंघ के सदस्य बनें और सोसल मीडिया से जुड़े

डॉ0 उदित राज के नेतृत्व में चल रहे ऑल इंडिया परिसंघ की स्थापना 1997 में पांच आरक्षण विरोधी आदेशों की वापिसी के लिए हुआ और तब से लगातार संघर्ष करते हुए अनेको अधिकार सुरक्षित कराए। आगे भी संघर्ष जारी रहेगा। आप परिसंघ के सदस्य बनकर इस आंदोलन को सहयोग कर सकते हैं। सदस्य बनने के लिए www.aiparisangh.com पर लॉगिन करें। आप उपलब्धियों और गतिविधियों की लगातार जानकारी के लिए परिसंघ के सोसल मीडिया एकाउंट www.facebook.com/aiparisangh को लाइक करें। twitter.com/aiparisangh पर फालो करें। Whatsapp No. : 9899766443 को अपने फोन में सेव करें और किसी भी जानकारी के लिए info@aiparisangh.com पर ईमेल करें।

बुद्ध पूर्णिमा पर बुद्ध के दुश्मनों को पहचानिए

संजय जोठे

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बुद्ध के सबसे पुराने और सबसे शातिर दुश्मनों को आप आसानी से पहचान सकते हैं। यह दिन बहुत खास है इस दिन आँखें खोलकर चारों तरफ देखिये। बुद्ध की मूल शिक्षाओं को नष्ट करके उसमें आत्मा परमात्मा और पुनर्जन्म की बकवास भरने वाले बाबाओं को आप काम करता हुआ आसानी से देख सकेंगे। भारत में तो ऐसे त्यागियों, योगियों, रजिस्टर्ड भगवानों और स्वयं को बुद्ध का अवतार कहने वालों की कमी नहीं है। जैसे इन्होंने बुद्ध को उनके जीते जी बर्बाद करना चाहा था वैसे ही ढंग से आज तक ये पाखंडी बाबा लोग बुद्ध के पीछे लगे हुए हैं।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन भारत के वेदांती बाबाओं सहित दलाई लामा जैसे स्वघोषित बुद्ध अवतारों को देखिये। ये विशुद्ध राजनेता हैं जो अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं को उल्टा सीधा तोड़ मरोड़कर उसमें आत्मा परमात्मा घुसेड देते हैं। भारत के एक फाइव स्टार रजिस्टर्ड भगवान भगवान् रजनीश ने तो दावा कर ही दिया था कि बुद्ध उनके शरीर में आकर रहे, इस दौरान उनके भक्तों ने प्रवचनों के दौरान उन्हें बुद्ध के नाम से ही संबोधित किया लेकिन ये ''परीक्षण'' काम नहीं किया और भगवान रजनीश ने खुद को बुद्ध से भी बड़ा बुद्ध घोषित करते हुए सब देख भालकर घोषणा की कि ''बुद्ध मेरे शरीर में भी आकर एक ही करवट सोना चाहते हैं, आते ही अपना भिक्षा पात्र मांग रहे हैं, दिन में एक ही बार नहाने की जिद करते हैं'' ओशो ने आगे कहा कि बुद्ध की इन सब बातों के कारण मेरे सर में दर्द हो गया और मैंने बुद्ध को कहा कि आप अब मेरे शरीर से निकल जाइए।

जरा गौर कीजिये। ये भगवान् रजनीश जैसे महागुरुओं का ढंग है बुद्ध से बात करने का। और कहीं नहीं तो कम से कम कल्पना और गप्प में ही वे बुद्ध का सम्मान कर लेते लेकिन वो भी इन धूर्त बाबाजी से न हो सका। आजकल ये बाबाजी और उनके फाइव स्टार शिष्य बुद्ध के अधिकृत व्याख्याता बने हुए हैं और बहुत ही चतुराई से बुद्ध की शिक्षाओं और भारत में बुद्ध के साकार होने की संभावनाओं को खत्म करने में लगे हैं। इसमें सबसे बड़ा दुर्भाग्य ये है कि दलित बहुजन समाज के और अंबेडकरवादी आन्दोलन के लोग भी इन जैसे बाबाओं से प्रभावित होकर अपने और इस देश के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं।

इस बात को गौर से समझना होगा कि भारतीय वेदांती बाबा किस तरह बुद्ध को और उनकी शिक्षाओं को नष्ट करते आये हैं। इसे ठीक से समझिये। बुद्ध की मूल शिक्षा अनात्मा की है। अर्थात कोई 'आत्मा नहीं होती'। जैसे अन्य धर्मों में इश्वर, आत्मा और पुनर्जन्म होता है वैसे बुद्ध के धर्म में ईश्वर आत्मा और पुनर्जन्म का कोई स्थान नहीं है। बुद्ध के अनुसार हर व्यक्ति का शरीर और उसका मन मिलकर एक आभासी स्व का निर्माण करता है जो अनेकों अनेक गुजर चुके शरीरों और मन के अवशेषों से और सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षणिक आदि आदि कारकों के प्रभाव से बनता है, ये शुद्धतम भौतिकवादी निष्पत्ति है। किसी व्यक्ति में या जीव में कोई सनातन या अजर अमर आत्मा जैसी कोई चीज नहीं होती। और इसी कारण एक व्यक्ति का पुनर्जन्म होना एकदम असंभव है।

जो लोग पुनर्जन्म के दावे करते हैं वे बुद्ध से धोखा करते हैं। इस विषय में दलाई लामा का उदाहरण लिया जा सकता है। ये सज्जन कहते हैं कि वे पहले दलाई लामा के तेरहवें या चौदहवें अवतार हैं और हर बार खोज लिए जाते हैं। अगर इनकी बात मानें तो इसका मतलब हुआ कि इनके पहले के दलाई लामाओं का सारा संचित ज्ञान, अनुभव और बोध बिना रुकावट के इनके पास आ रहा है। सनातन और अजर-अमर आत्मा के पुनर्जन्म का तकनीकी मतलब यही होता है कि अखंडित आत्मा अपने समस्त संस्कारों और प्रवृत्तियों के साथ अगले जन्म में जा रही है।

अब इस दावे की मूर्खता को ठीक से देखिये। ऐसे लामा और ऐसे दावेदार खुद को किसी अन्य का पुनर्जन्म बताते हैं लेकिन ये गजब की बात है कि इन्हें हर जन्म में शिक्षा दीक्षा और जिन्दगी की हर जरुरी बात को ए बी सी डी से शुरू करना पड़ता है। भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि ही नहीं बल्कि इनका अपना पालतू विषय अध्यात्म और ध्यान भी किसी नए शिक्षक से सीखना होता है। अगर इनका पुनर्जन्म का दावा सही है तो अपने ध्यान से ही इन चीजों को पिछले जन्म से 'री-कॉल' क्यों नहीं कर लेते? आपको भी स्पेशल ट्यूटर रखने होते हैं तो एक सामान्य आदमी में और इन अवतारों में क्या अंतर है?

इस बात को ठीक से देखिये। इससे साफ जाहिर होता है कि अवतार की घोषणा असल में एक राष्ट्राध्यक्ष के राजनीतिक पद को वैधता देने के लिए की जाती है। जैसे ही नया नेता खोजा जाता है उसे पहले वाले का अवतार बता दिया जाता है इससे असल में जनता में उस नेता या राजा के प्रति पैदा हो सकने वाले अविश्वास को खत्म कर दिया जाता है या उस नेता या राजा की क्षमता पर उठने वाले प्रश्न को भी खत्म कर दिया जाता है, जनता इस नये नेता को पुराने का पुनर्जन्म मानकर नतमस्तक होती रहती है और शिक्षा, रोजगार, विकास, न्याय आदि का प्रश्न नहीं उठाती, इसी मनोविज्ञान के सहारे ये गुरु सदियों सदियों तक गरीब जनता का खून चूसते हैं। यही भयानक राजनीति भारत में अवतारवाद के नाम पर हजारों साल से खेली जाती रही है। इसी कारण तिब्बत जैसा खूबसूरत मुल्क अन्धविश्वासी और परलोकवादी बाबाओं के चंगुल में फंसकर लगभग बर्बाद हो चुका है। वहां न शिक्षा है न रोजगार है न लोकतंत्र या आधुनिक समाज की कोई चेतना बच सकी है।

अब ये लामा महाशय तिब्बत को बर्बाद करके धूमकेतु की तरह भारत में घूम रहे हैं और अपनी बुद्ध विरोधी शिक्षाओं से भारत के बौद्ध आन्दोलन को पलीता लगाने का काम कर रहे हैं। भारत के बुद्ध प्रेमियों को ओशो रजनीश जैसे धूर्त वेदान्तियों और दलाई लामा जैसे अवसरवादी राजनेताओं से बचकर रहना होगा। डॉ. अंबेडकर ने हमें जिस ढंग से बुद्ध और बौद्ध धर्म को देखना सिखाया है उसी नजरिये से हमे बुद्ध को देखना होगा। और ठीक से समझा जाए तो अंबेडकर जिस बुद्ध की खोज करके लाये हैं वही असली बुद्ध हैं। ये बुद्ध आत्मा और पुनर्जन्म को सिरे से नकारते हैं।

लेकिन भारतीय बाबा और फाइव स्टार भगवान लोग एकदम अलग ही खिचडी पकाते हैं। ये कहते हैं कि सब संतों की शिक्षा एक जैसी है, सबै सयाने एकमत और फिर उन सब सयानों के मुंह में वेदान्त ठूंस देते हैं। कहते हैं बुद्ध ने आत्मा और परमात्मा को जानते हुए भी इन्हें नकार दिया क्योंकि वे देख रहे थे कि आत्मा परमात्मा के नाम पर लोग अंधविश्वास में गिर सकते थे। यहाँ दो सवाल उठते हैं, पहला ये कि क्या बुद्ध ने स्वयं कहीं कहा है कि उन्होंने आत्मा परमात्मा को जानने के बाद भी उसे नकार दिया? दूसरा प्रश्न ये है कि बुद्ध अंधविश्वास को हटाने के लिए ऐसा कर रहे थे तो अन्धविश्वास का भय क्या उस समय की तुलना में आज एकदम खत्म हो गया है? दोनों सवालों का एक ही उत्तर है, ''नहीं''।

गौतम बुद्ध कुटिल राजनेता या वेदांती मदारी नहीं हैं। वे एक ईमानदार क्रांतिचेता और मनोवैज्ञानिक की तरह तथ्यों को उनके मूल रूप में रख रहे हैं। उनका अनात्मा का अपना विशिष्ट दर्शन और विश्लेषण है। उसमे वेदांती ढंग की सनातन आत्मा का प्रक्षेपण करने वाले गुरु असल में बुद्ध के मित्र या हितैषी नहीं बल्कि उनके सनातन दुश्मन हैं। आजकल आप किसी भी बाबाजी के पंडाल या ध्यान केंद्र में चले जाइए। या यहीं फेसबुक पर ध्यान की बकवास पिलाने वालों को देख लीजिये। वे कृष्ण और बुद्ध को एक ही सांस में पढ़ाते हैं, ये गजब का अनुलोम-विलोम है। जबकि इनमे थोड़ी भी बुद्धि हो तो समझ आ जाएगा कि बुद्ध आत्मा को नकारते हैं और कृष्ण आत्मा को सनातन बताते हैं, कृष्ण और बुद्ध दो विपरीत छोर हैं। लेकिन इतनी जाहिर सी बात को भी दबाकर ये बाबा लोग अपनी दुकान कैसे चला लेते हैं? लोग इनके झांसे में कैसे आ जाते हैं? यह बात गहराई से समझना चाहिए।

असल में ये धूर्त लोग भारतीय भीड़ की गरीबी, कमजोरी, संवादहीनता, कुंठा, अमानवीय शोषण, जातिवाद आदि से पीड़ित लोगों की सब तरह की मनोवैज्ञानिक असुरक्षाओं और मजबूरियों का फायदा उठाते हैं और तथाकथित ध्यान या समाधि या चमत्कारों के नाम पर मूर्ख बनाते हैं। इन बाबाओं की किताबें देखिये, आलौकिक शक्तियों के आश्वासन और अगले जन्म में इस जन्म के अमानवीय कष्ट से मुक्ति के आश्वासन भरे होते हैं। इनका मोक्ष असल में इस जमीन पर बनाये गये अमानवीय और नारकीय जीवन से मुक्त होने की वासना का साकार रूप है। इस काल्पनिक मोक्ष में हर गरीब शोषित इंसान ही नहीं बल्कि हराम का खा खाकर अजीर्ण, नपुंसकता और कब्ज से पीड़ित हो रहे राजा और सामंत भी घुस जाना चाहते हैं। आत्मा को सनातन बताकर गरीब को उसके आगामी जन्म की विभीषिका से डराते हैं और अमीर को ऐसे ही जन्म की दुबारा लालच देकर उसे फंसाते हैं, इस तरह इस मुल्क में एक शोषण का सनातन साम्राज्य बना रहता है। और शोषण का ये अमानवीय ढांचा एक ही बिंदु पर खड़ा है वह है सनातन आत्मा का सिद्धांत।

इसके विपरीत बुद्ध ने जिस निर्वाण की बात कही है या बुद्ध ने जिस तरह की अनत्ता की टेक्नोलोजी दी है और उसका जो ऑपरेशनल रोडमेप दिया है उसके आधार पर यह स्थापित होता है कि आत्मा यानी व्यक्तित्व और स्व जैसी किसी चीज की कोई आत्यंतिक सत्ता नहीं है। यह एक कामचलाऊ स्व या व्यक्तित्व है जो आपने अपने जन्म के बाद के वातावरण में बहुत सारी कंडीशनिंग के प्रभाव में पैदा किया है, ये आपने अपने हाथ से बनाया है और इसे आप रोज बदलते हैं।

आप बचपन में स्कूल में जैसे थे आज यूनिवर्सिटी में या कालेज में या नौकरी करते हुए वैसे ही नहीं हैं, आपका स्व या आत्म या तथाकथित आत्मा रोज बदलती रही है। शरीर दो पांच दस साल में बदलता है लेकिन आत्मा या स्व तो हर पांच मिनट में बदलता है। इसी प्रतीति और अनुभव के आधार पर ध्यान की विधि खोजी गयी। बुद्ध ने कहा कि इतना तेजी से बदलता हुआ स्व जिसे हम अपना होना या आत्मा कहते हैं। इसी में सारी समस्या भरी हुयी है। इसीलिये वे इस स्व या आत्मा को ही निशाने पर लेते हैं। बुद्ध के अनुसार यह स्व या आत्मा एक कामचलाऊ धारणा है, ये आत्मा सिर्फ इस जीवन में लोगों से संबंधित होने और उनके साथ समाज में जीने का उपकरण भर है। इस स्व या आत्म की रचना करने वाले शरीर, कपड़े, भोजन, शिक्षा और सामाजिक धार्मिक प्रभावों को अगर अलग कर दिया जाए तो इसमें अपना आत्यंतिक कुछ भी नहीं है। यही अनात्मा का सिद्धांत है। यही आत्मज्ञान है। बुद्ध के अनुसार एक झूठे स्व या आत्म के झूठेपन को देख लेना ही आत्मज्ञान है।

लेकिन वेदांती बाबाओं ने बड़ी होशियारी से बुद्ध के मुंह में वेदान्त ठूंस दिया है और इस झूठे अस्थाई स्व, आत्म या आत्मा को सनातन बताकर बुद्ध के आत्मज्ञान को 'सनातन आत्मा के ज्ञान' के रूप में प्रचारित कर रखा है। अगर आप इस गहराई में उतरकर इन बाबाओं और उनके अंधभक्तों से बात करें तो वे कहते हैं कि ये सब अनुभव का विषय है इसमें शब्दजाल मत रचिए। ये बड़ी गजब की बात है। बुद्ध की सीधी सीधी शिक्षा को इन्होने न जाने कैसे कैसे श्ब्द्जालों और ब्रह्मजालों से पाट दिया है और आदमी कन्फ्यूज होकर जब दिशाहीन हो जाता है तो ये उसे तन्त्र मन्त्र सिखाकर और भयानक कंडीशनिंग में धकेल देते हैं। इसकी पड़ताल करने के लिए इनकी गर्दन पकड़ने निकलें तो ये कहते हैं कि ये अनुभव का विषय है। इनसे फिर खोद खोद कर पूछिए कि आपको क्या अनुभव हुआ ? तब ये जलेबियाँ बनाने लगते हैं। ये इनकी सनातन तकनीक है।

असल में सनातन आत्मा सिखाने वाला कोई भी अनुशासन एक धर्म नहीं है बल्कि ये एक राजनीती है। इसी हथकंडे से ये सदियों से समाज में सृजनात्मक बातों को उलझाकर नष्ट करते आये हैं। भक्ति भाव और सामन्ती गुलामी के रूप में उन्होंने जो भक्तिप्रधान धर्म

(शेष पृष्ठ 6 पर)

दलित महापंचायत इलाहाबाद में संपन्न

सोनू हत्याकांड के आरोपियों पर मुकदमा दर्ज

27 अप्रैल, 2017 को दोलन तिवारी, राजू तिवारी द्वारा निर्दयता से आंख निकालकर सोनू सोनकर की हत्या कर दी गयी। मारने के बाद शव को पत्थर बांधकर तालाब में फेंक दिया गया। जब परिजनों को इसकी जानकारी हुई तो लाश को लेकर पुलिस ने जबरदस्ती पोस्ट मार्टम करा दिया तथा फर्जी ढंग से पुलिस तथा पोस्टमार्टम करने की टीम ने हत्या को आत्म हत्या में तब्दील कर दिया इसके विरोध में सोनू सोनकर के परिजन तथा स्थानीय दलितों ने थाने का घेराव किया तो पुलिस द्वारा मारपीट गयी और 122 दलितों के खिलाफ 15 गैर जमानती धाराओं में तीन फर्जी मुकदमें लाद दिए गए। यही नहीं इसके उपरांत स्थानीय सवर्ण थानाध्यक्ष के नेतृत्व में गिरधरपुर की दलित बस्ती में घुसकर स्त्री, पुरुष, बृद्ध, बच्चों व महिलाओं की निर्ममतापूर्वक पिटायी की गयी। उनकी मड़ही तोड़ दी गयी, खिड़की व दरवाजे तोड़ दिए गए व लूटपाट की गयी और दहसत फैला दी गयी। पुलिस के उत्पीड़पन के डर से दलित बस्ती छोड़कर भाग गए।

कौंशाबी के सांसद विनोद सोनकर तथा परिसंघ के जोनल कोर्डिनेटर प्रदीप वर्मा (एडवोकेट हाई कोर्ट) के पहुंचने पर तथा पुलिस प्रशासन को फटकारने पर नाबालिक सोनू सोनकर के आत्महत्या के स्थान पर तोलन तिवारी आदि के विरुद्ध हत्या का नामजद मुकदमा मांडा पुलिस द्वारा दर्ज किया गया, लेकिन दलित बस्ती में तथा स्थानीय दलितों में भय व्याप्त था, जिसकी गुहार परिसंघ के राष्ट्रीय चेयरमैन, डॉ. उदित राज से लगायी गयी।

डॉ. उदित राज जी के निर्देश पर प्रदीप वर्मा के नेतृत्व में 10 मई को परिसंघ तथा स्थानीय दलित संगठनों के तत्वावधान में विशाल दलित महापंचायत आयोजित की गयी। परिसंघ के पदाधिकारियों की टीम जिसमें संजय राज सोनकर, इन्द्रेश सोनकर, भोला सोनकर, रमाकांत पासी, महेन्द्र सरोज, आशीष सोनकर, बृजेश सोनकर, ने इलाहाबाद तथा दलित बस्तियों में जाकर रात-दिन लगाकर लामबंद किया और हजारों की संख्या में दलित वर्ग इसमें शामिल हुआ। इस दलित पंचायत के बाद दबाव में आकर इलाहाबाद जनपद के अपर जिलाधिकारी, एस.पी. जमुनापार, आठ थानाध्यक्ष, दो एस.डी.एम., चार बस सी.आर.पी.एफ., चार बस आर.पी.एफ., दो ट्रक पी.ए.सी. पंचायत की सुरक्षा में लगे हुए थे कि दलितों की उत्तेजना के कारण सवर्ण बनाम दलित का दंगा न भड़क जाए।

संबोधित करते हुए डॉ. उदित राज व उनके दाएं एस.पी. जमनापार, ए.के. राय, एवं ए.डी.एम., महेन्द्र राय एवं बाएं संजय राज, प्रदीप वर्मा व अन्य वरिष्ठ नेता

पंचायत के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. उदित राज जी ने पंचायत को संबोधित करते हुए कहा कि स्थानीय पुलिस प्रशासन के दलित विरोधी रवैए के कारण इतनी बड़ी घटना हुई, जिसमें जिला प्रशासन के उच्च अधिकारियों की भी मिलीभगत है। मंच के माध्यम से अल्टीमेटम दिया कि अगर उत्पीड़ित दलितों को न्याय नहीं मिलता है तो इस क्षेत्र से उठकर यह पंचायत जिला, कमिश्नरेट, लखनऊ और इसके बाद भी मागें न माने जाने पर इसकी आंच दिल्ली तक पहुंचेगी। उ.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी जी को स्थानीय प्रशासन के दलित विरोधी रवैए को अवगत कराकर कड़ी कार्यवाही की मांग की जाए। संकट की इस घड़ी में सभी लोगों को मिलजुलकर मृतक सोनू सोनकर की न्याय की लड़ाई के लिए तन-मन-धन से परिसंघ को मजबूत किया जाना चाहिए, क्योंकि परिसंघ ही एक मात्र ऐसा संगठन है जो इस तरह के उत्पीड़न के खिलाफ खड़ा होता है।

स्थल पर पंचायत वर्मा (एडवोकेट) द्वारा अपर जिलाधिकारी, इलाहाबाद तथा एस.पी. जमुनापार को लिखित ज्ञापन सौंपा गया, जिसमें सोनू सोनकर के हत्यारों की गिरफ्तारी एवं पुलिसिया दलित उत्पीड़न के संबंध में निष्पक्ष मजिस्ट्रेटी जांच के लिए ए.डी.एम. रैंक के अधिकारी की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय राजपत्रित अधिकारियों की कमेटी के गठन की मांग की गयी। जिसमें एक एस.डी.एम., एक पुलिस उपाधीक्षक तथा एक मेडिकल ऑफीसर होगा। इसमें अनिवार्य रूप से एक दलित अधिकारी होना चाहिए। जिला प्रशासन द्वारा उपरोक्त मांगों को मानकर कमेटी का गठन भी कर दिया गया है, जो 15 दिनों के अंदर अपनी जांच रिपोर्ट परिसंघ को देगी। यह परिसंघ की बहुत बड़ी विजय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता, रमाकांत पासी, एवं संचालन प्रदीप वर्मा ने किया। संबोधित करने वाले नेताओं में प्रमुख रूप से सर्वश्री सुशील कमल - प्रदेश अध्यक्ष, परिसंघ, जनाब सना उल्ला खां, राष्ट्रीय अध्यक्ष - भीम सेना, संजय राज सोनकर - राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष परिसंघ, जितेन्द्र सोनकर - ब्लाक प्रमुख सिराथू, घनश्याम कोटारे - ब्लाक प्रमुख जबरा, इलाहाबाद, कालीचरन सोनकर - पूर्व विधायक, इन्द्रेश सोनकर, यीशु सोनकर, आशीष सोनकर, भोला सोनकर, राहुल सोनकर, सूबा लाल सोनकर - प्रधान, अशोक सोनकर, राकेश चौधरी, प्रेम चंद प्रजापति, दिनेश पासी - जिला पंचायत सदस्य, भानु सरोज, गैरी शंकर भारती, टिंकू सोनकर, डब्बू सोनकर, प्रिंस सोनकर, रंग बहादुर सोनकर, पप्पू सोनकर, रणजीत सोनकर सहित अन्य परिसंघ के पदाधिकारी।

पंचायत स्थल पर मृतक सोनू सोनकर की लड़ाई को अंत तक लड़ने के लिए परिसंघ के माध्यम से प्रदीप वर्मा तथा स्थानीय टीम द्वारा 22 हजार रूपये का आर्थिक सहयोग भी एकत्रित किया गया। उपस्थित लोगों ने आगे भी सहयोग करते रहने के लिए हुंकार भरी। परिसंघ द्वारा 15 दिन का अल्टीमेटम जिला प्रशासन को दिया गया है। अगर दिए गए ज्ञापन पर कार्यवाही नहीं होती है तो परिसंघ की इलाहाबाद इकाई के नेतृत्व में 15 दिनों के बाद जिलाधिकारी कार्यालय इलाहाबाद पर विशाल दलित महापंचायत होगी।

दलित ने नहीं मानी ये बात तो ऊंची जाति वालों ने कुंए में डाल दिया केरोसिन

प्रतिभा कुमारी

ऊंची जाति के लोगों ने यह घृणित कदम सिर्फ इस वजह से उठाया क्योंकि एक दलित ने अपनी बेटी की शादी के लिए बैंड बाजे वाले को बुलाया था। मध्य प्रदेश में दलितों के साथ दुर्व्यवहार का एक दुर्भाग्यपूर्ण मामला सामने आया है। बदला लेने के लिए ऊंची जाति के लोगों ने दलितों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे कुंए में केरोसिन डाल दिया। यह घटना मलवा जिले के मना गांव की है।

शादी में बैंड बाजे वाले को बुलाने से ये नाराज

ऊंची जाति के लोगों ने यह घृणित कदम सिर्फ इस वजह से उठाया क्योंकि चंदेर मेघवल नामक एक दलित ने अपनी बेटी की शादी के लिए बैंड बाजे वाले को बुलाया था। जबकि उन्हें बहिष्कृत करने की धमकी भी दी गई, इसके बावजूद 45 वर्षीय मेघवाल ने बैंड बाजे वाले को आमंत्रित किया और इसका खामियजा भुगतना पड़ा।

दलितों को सिर्फ ढोल बजाने की है इजाजत

दरअसल, मना गांव में दलितों को इस तरह की परंपरा की इजाजत नहीं है और वे दूल्हे के स्वागत में सिर्फ ढोल बजा सकते हैं। हालांकि मिल रही धमकियों के बीच मेघवल ने पुलिस को इसकी सूचना दे दी और कड़ी सुरक्षा के बीच उनकी बेटी की शादी संपन्न हुई।

पंप का इस्तेमाल कर कुंए को किया साफ

उधर, दलित द्वारा नजरअंदाज किए जाने से गुस्साए ऊंची जाति के लोगों ने बदले के तौर पर उनके कुंए में केरोसिन डाल दिया। वहीं दलितों ने पानी के लिए एक अलग रास्ता निकाल लिया। उन्होंने कालीसिंध नदी के किनारे एक गड्ढा खोद लिया। पंप का इस्तेमाल कर कुंए में पानी से केरोसिन अलग भी कर लिया।

पुलिस कर रही मामले की जांच

जिला कलेक्टर डी वी सिंह के साथ पुलिस अधीक्षक आर एस मीणा ने मना गांव का दौरा किया और कुंए का पानी पीकर दलितों को सुनिश्चित किया कि यह पीने के लिए बिल्कुल सुरक्षित है। उन्होंने ऊंची जाति के लोगों से बातचीत भी की और कहा कि चूंकि कुंआ दलितों का है, इसलिए वे भविष्य में इस तरह की हरकत न करें। पुलिस पूरे मामले की जांच भी कर रही है।

http://www.jagran.com/news/national-mp-dalits-well-poured-with-kerosene-in-revenge-15950583.html?utm_source=JagranFacebook&utm_medium=Social&utm_campaign=National_LT_010517

अम्बेडकरवाद सही मायने में लागू करने की जरुरत है : उदित राज

मुंबई, 30 अप्रैल, 2017

जब आरक्षण लेना होता है, एम.एल.ए. बनना होता है, तब लोग आगे आते हैं, मगर जब अम्बेडकरवाद को इम्प्लीमेंट करने की बात होती है या संघर्ष करने की बात होती है, तब वे कहते हैं कि हमें तो खबर ही नहीं थी। तो अमल करने वाले लोग बाहर से नहीं आएंगे हमको ही आगे बढ़कर इसको लागू करना होगा। फुले व शाहूजी आदि ने जो विचार दिया उनको अमल में कैसे लाएं, इस पर विचार करने की जरुरत है। जब सारे देशों ने उन्नति की शुरुवात की, हमने भी उसी वक्त शुरुवात की लेकिन हम आज कहां है ? प्रश्न यह है कि अम्बेडकरवाद को जीवन में हम कैसे लागू करें ? ऐसा प्रतिपादन 126वीं अंबेडकर जयंती के समारोह में अनुसूचित/जनजाति परिसंघ के अध्यक्ष डॉ. उदित राज किया।

उन्होंने आगे कहा ''जयंती मनानी है, यह सही बात है, मगर आंबेडकर जी के विचारों को आगे बढ़ाना है तो कार्यकर्त्ता बनाने की सबसे ज्यादा जरुरत है। यदि हममें से सभी दस-दस कार्यकर्त्ता बना लें तो एक अच्छी ताक़त बन सकती है। ताक़त से ही समाज बदलता है और सरकारें नोटिस करती हैं, भाषणों से नहीं बदलता समाज। डॉ. आंबेडकर के संघर्ष की वजह से जो जिनको आरक्षण का लाभ मिला है, उन्हें यह काम करने के लिए सबसे पहले आगे आना चाहिए।

हम संघर्ष करने वाले लोग हैं। आरक्षण की बात हो, प्रोमोशन की बात हो संघर्ष करने से हम पीछे नहीं हटेंगे, मगर हमको यह देखना होगा की पब्लिक सेक्टर, सरकारी नौकरिया खतम हो रही हैं. ''

परमाणु उर्जा केन्द्रीय संघटन के एस /एसटी स्पेशल सेल की तरफ से भारतरत्न बाबासाहब

डॉ. अम्बेडकर की 126वीं जयंती अटॉमिक एनर्जी जूनियर कोलेज में 30 अप्रैल 2017 को मनाई गयी। इस अवसर पर परमाणु उर्जा शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री रजनीश प्रकाश, सचिव श्री एस.के. मल्होत्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर परमाणु उर्जा शिक्षण संस्था के अध्यक्ष डॉ. रजनीश प्रकाश जी ने कहा ''डॉ. बाबासाहब किसी एक समाज के नेता नहीं हम सब के नेता हैं। उनको किसी एक समाज में सीमित करना ठीक नहीं।''

मुख्य अतिथि के रूप में परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, डॉ. उदित राज इस कार्यक्रम में शामिल हुए। परमाणु उर्जा संघटन के कई पदाधिकारी इसमें शामिल हुए और कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सुरेशजी, प्रतापसिंह जी , सुर्यवंशीजी और अनिल जाधव ने विशेष परिश्रम किया। कार्यक्रम में स्वगत श्री बाबू रामजी ने किया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन संपर्क अधिकारी चिन्मय बासु एवं विश्वास माने ने किया।

– पंचम राम
मो. 9413233152

मां का प्यार कभी कम नहीं होता

माँ सुनते ही आंखों में जैसे कोई जादुई छड़ी घूमने लगती है। बात मेरी या आपकी मां की नहीं। ये कौम ही कुछ विशिष्ट है, बड़ी फुरसत में बनाई हुई। जो दिखती सामान्य इंसान-सी ही है पर, ईश्वर ने इसे एक दर्जन हाथ, सैकड़ों मस्तिष्क, रात भर जागने और अपने हर दर्द को सहन करने की अपार शक्ति का वरदान दिया हुआ है। ऐसा नहीं कि पिता की कोई अहमियत नहीं होती। बहुत होती है। अब समय बदल रहा है पर फिर भी भारतीय परिवारों में पिता ही घर का संरक्षक होता है और आमदनी कमाने की जिम्मेदारी मुख्यतः उसी के कंधे पर अधिक होती है। यही कारण है कि वह चाहते हुए भी परिवार को उतना समय कभी नहीं दे पाता, जितना कि मां दे सकती है।

'मां' की उपलब्धता ईश्वर सरीखी होती है, बच्चे ने याद किया तो वो नौकरी से भी भागती हुई चली आएगी। घर में कोई अस्वस्थ है, तो उसकी सेवा में दिन-रात एक कर देती है। कोई भी मौसम हो, घर के प्रत्येक सदस्य के पसंदीदा व्यंजन बनाने में थकती नहीं। बच्चों की स्कूल मीटिंग हो, प्रोजेक्ट में सहायता चाहिए हो, किसी विषय को समझने में दिक्कत हो, लास्ट मिनट स्कूल में कुछ मंगाया हो, फैंसी ड्रेस या किसी प्रतियोगिता के लिए तैयारी करनी हो.... सब कुछ किसी जादूगरनी-सा करती चली जाती है। यहां तक कि बिना कहे परेशानी भी भांप लेती है। न जाने इस सबके बीच भी उसकी मुस्कान कभी चूकती क्यों नहीं!

कोई मेहमान आ जाये, तो उसे लाने, छोड़ने और पूरा शहर घुमाने में उसे कितना मजा आता है। भले ही फिर रात भर जागकर, अपने कामों को निबटाना पड़े और गजब देखो कि सुबह मुर्गे की बांग से भी पहले किचन से बर्तन की आवाज आनी शुरू हो जाती है। मां, यार तुम थकती नहीं ? तुम मशीन हो या कोई रोबोट ? ये, अपने को सबसे लास्ट में रखने का बेहूदा ख्याल तुम्हें आ कैसे जाता है ? हर बात में कैसे कह लेती हो कि मेरी तो कोई बात नहीं।

अरे! कहीं जा रहे हो..... पूरे मन से तैयार होती हो और फिर जब लगता है कि गाड़ी में जगह कम है तो कहेगी, फलाना जगह तो मैंने दस बार देखी है, जाओ तुम लोग घूम आओ! खाने में तुम्हारी पसंदीदा व्यंजन कम हो तो कह दोगी, आज मेरा इसे खाने का मन ही नहीं, जी भर गया है खा-खा के। बुआ, चाची, ताई, मौसी, दोस्त, दूर-पास के रिश्तेदार सबके लिए अपने हृदय के द्वार बिना किसी शिकवे के कैसे खोल लेती हो ? कैसे तुम कुछ लोगों का दुर्व्यवहार भूल सामान्य होकर बात कर लेती हो ? सबके लिए अपना कलेजा तक निकालने को क्यों तैयार हो जाती हो ?

घर में किसी का कोई भी सामान गुम हो जाए तो पल भर में ही ढूंढ, हाथ में थमा देती हो। कोई बाहर जाए, तो इंतजार में कैसी उदास हो जाती हो पर जाहिर नहीं करतीं कभी। थकती हो, पर शिकायत नहीं की किसी से। सबकी अपनी दिनचर्या है और तुम्हारी दिनचर्या, उनके हिसाब से घूमती रहती है। तुम धुरी हो घर की, सबसे समान रूप से जुड़ी हो। कोई बच्चों को हाथ भी लगाए तो ढाल बन खड़ी हो जाती हो। पिता तक बच्चों की हर सिफारिश कैसे मुलायम तरीके से पहुंचाती हो। लेकिन अपनी इच्छाओं की भनक तक नहीं लगने देतीं। कमाल हो यार!

आखिर, हर कोई मां के गुण क्यों न गाए ? वो मात्र जीवनदायिनी ही नहीं, उम्र भर संरक्षक का कार्य भी करती है। इनके जीवन में कोई भी आकस्मिक या वैकल्पिक अवकाश नहीं होता। अपनी जिम्मेदारी को कोई शत-प्रतिशत निभाता है तो वह मां ही है। उसके लिए ये न जिम्मेदारी है न त्याग, एक रूहानी सुकून है जो उसके चेहरे पर कभी मुस्कान, कभी तेज बन दमकता है। 'मां' सिर्फ एक संबोधन है, लेकिन इसके भीतर दसियों व्यक्तित्व रहते हैं। जो समय और परिस्थिति अनुसार, अपनी भूमिका बदलते रहते हैं।

'मां' के बारे में पूरी तरह, मां बनने के बाद ही समझ आता है। कई अनुत्तरित प्रश्नों के हल अपने-आप मिलते चले जाते हैं और एक दिन हम सब भी वही कुछ दोहराने लगते हैं।

आज 'मदर्स डे' जरुर है पर अधिकांश माएं आज भी उसी दिनचर्या को फॉलो कर रही होंगीं। हां, बच्चों ने गले लग विश जरुर किया होगा और इसी से उनका दिन बन गया होगा।

एक बात है कि 'मां' का गुणगान तो हम सदियों से करते ही आ रहे हैं, पर इसके अलावा हमने उनके लिए और क्या किया है ? इस सवाल का जवाब देने का वक्त अब आ चुका है। कहीं ऐसा न हो कि मां रिटायर होने की बात कहे और आप चारों खाने चित्त नजर आओ।

(पृष्ठ 3 का शेष)

बुद्ध पूर्णिमा पर बुद्ध के दुश्मनों . . .

रचा है वो असल में भगवान और उसके प्रतिनिधि राजा को सुरक्षा देता आया है। यही बात है कि हस्ती मिटती नहीं इनकी, इस भक्ति में ही सारा जहर छुपा हुआ है। इसी से भारत में सब तरह के बदलाव रोके जाते हैं। और इतना ही नहीं व्यक्तिगत जीवन में अनात्मा के अभ्यास या ज्ञान से जो स्पष्टता और समाधि (बौद्ध समाधी)फलित हो सकती है वह भी असंभव बन जाती है।

ये पाखंडी गुरु एक तरफ कहते हैं कि मैं और मेरे से मुक्त हो जाना ही ध्यान, समाधि और मोक्ष है और दूसरी तरफ इस मैं और मेरे के स्त्रोत इस सनातन आत्मा की घुट्टी भी पिलाए जायेंगे। एक हाथ से जहर बेचेंगे दुसरे हाथ से दवाई। एक तरफ मोह माया को गाली देंगे और अगले पिछले जन्म के मोह को भी मजबूत करेंगे। एक तरह शरीर, मन और संस्कारों सहित आत्मा के अनंत जन्मों के कर्मों की बात सिखायेंगे और दूसरी तरफ अष्टावक्र की स्टाइल में ये भी कहेंगे कि तू मन नहीं शरीर नहीं आत्मा नहीं, तू खुद भी नहीं ये जान ले और अभी सुखी हो जा। ये खेल देखते हैं आप? ले देकर आत्मभाव से मुक्ति को लक्ष्य बतायेंगे और साथ में ये भी ढपली बजाते रहेंगे कि आत्मा अजर अमर है हर जन्म के कर्मों का बोझ लिए घूमती है।

अब ऐसे घनचक्कर में इन बाबाओं के सौ प्रतिशत लोग उलझे रहते हैं, ये भक्त अपने बुढापे में भयानक अवसाद और कुंठा के शिकार हो जाते हैं। ऐसे कई बूढ़ों को आप गली मुहल्लों में देख सकते हैं। इनके जीवन को नष्ट कर दिया गया है। ये इतना बड़ा अपराध है जिसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती। दुर्भाग्य से अपना जीवन बर्बाद कर चुके ये धार्मिक बूढ़े अब चाहकर भी मुंह नहीं खोल सकते।

लेकिन बुद्ध इस घनचक्कर को शुरु होने से पहले ही रोक देते हैं। बुद्ध कहते हैं कि ऐसी कोई आत्मा होती ही नहीं इसलिए इस अस्थाई स्व में जो विचार संस्कार और प्रवृत्तियाँ हैं उन्हें दूर से देखा जा सकता है और जितनी मात्रा में उनसे दूरी बनती जाती है उतनी मात्रा में निर्वाण फलित होता जाता है। निर्वाण का कुल जमा अर्थ 'निवाण' है अर्थात दिशाहीन हो जाना। अगर आप किसी विचार या योजना या अतीत या भविष्य का बोध लेकर घूम रहे हैं तो आप 'वाण' की अवस्था में हैं अगर आप अनंत पिछले जन्मों और अनंत अगले जन्मों द्वारा दी गयी दिशा और उससे जुडी मूर्खता को त्याग दें तो आप अभी ही 'निर्वाण' में आ जायेंगे। लेकिन ये धूर्त फाइव स्टार भगवान् और इनके जैसे वेदांती बाबा इतनी सहजता से किसी को मुक्त नहीं होने देते। वे बुद्ध और निर्वाण के दर्शन को भी धार्मिक पाखंड की राजनीति का हथियार बना देते हैं और अपने भोग विलास का इन्तेजाम करते हुए करोड़ों लोगों का जीवन बर्बाद करते रहते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर इन बातों को गहराई से समझिये और दूसरों तक फैलाइये। एक बात ठीक से नोट कर लीजिये कि भारत में गरीबों, दलितों, मजदूरों, स्त्रीयों और आदिवासियों के लिए बुद्ध का अनात्मा का और निरीश्वरवाद का दर्शन बहुत काम का साबित होने वाला है। बुद्ध का निरीश्वरवाद और अनात्मवाद असल में भारत के मौलिक और ऐतिहासिक भौतिकवाद से जन्मा है। ऐसे भौतिकवाद पर आज का पूरा विज्ञान खड़ा है और भविष्य में एक स्वस्थ, नैतिक और लोकतांत्रिक समाज का निर्माण भी इसी भौतिकवाद की नींव पर होगा। आत्मा ईश्वर और पुनर्जन्म जैसी भाववादी या अध्यात्मवादी बकवास को जितनी जल्दी दफन किया जाएगा उतना ही इस देश का और इंसानियत का फायदा होगा।

अब शेष समाज इसे समझे या न समझे, कम से कम भारत के दलितों, आदिवासियों, स्त्रियों और शूद्रों (ओबीसी) सहित सभी मुक्तिकामियों को इसे समझ लेना चाहिए। इसे समझिये और बुद्ध के मुंह से वेदान्त बुलवाने वाले बाबाओं और उनके शीर्शों के षड्यंत्रों को हर चौराहे पर नंगा कीजिये। इन बाबाओं के षड्यंत्रकारी सम्मोहन को कम करके मत आंकिये। ये बाबा ही असल में भारत में समाज और सरकार को बनाते बिगाड़ते आये हैं। अगर आंप ये बात अब भी नहीं समझते हैं तो आपके लिए और इस समाज के लिए कोई उम्मीद नहीं है। इसलिए आपसे निवेदन है कि बुद्ध को ठीक से समझिये और दूसरों को समझाइये।

(लेखक लीड इंडिया फेलो हैं। मूलतः मध्यप्रदेश के निवासी हैं। समाज कार्य में पिछले 15 वर्षों से सक्रिय हैं। ब्रिटेन की ससेक्स यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय विकास अध्ययन में परास्नातक हैं और वर्तमान में टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से पीएचडी कर रहे हैं।)

http://www-nationaldastak-com/story/view/know&about&buddha&s&enemy&at&buddha&purnima

हिन्द मजदूर किसान पंचायत का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

हिन्द मजदूर किसान पंचायत (एच एम् के पी) का दो दिवसीय अधिवेशन रत्नागिरी, महाराष्ट्र में 7 एवं 8 मई 2017 को होटल गिरिरत्न के सभागृह में संपन्न हुआ। अधिवेशन में संगठन के पूरे देश यानी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के प्रतिनिधि शामिल हुए। ये प्रतिनिधि कोयला, इस्पात, परिवहन, कृषि, फिल्मोद्योग, मीडिया आदि क्षेत्रों से सम्बंधित थे। उनमें कश्मीर के शक्ल बुनकर तो भदोही के कालीन बनाने वाले भी शामिल थे।

अधिवेशन के मुख्य अतिथि थे सांसद डॉ. उदित राज। उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि वर्ष 1980 तक गरीबों और मजदूरों के संघर्ष को गंभीरता से लिया जाता था। उस समय के साहित्य, अखबार, फिल्म, शायरी और लेखन में गरीब और अमीर की चर्चा होती थी। 1991 में जब रूस में कम्युनिस्ट पार्टी का शासन खत्म हो गया तब दुनिया के स्तर पर तेजी से बदलाव आया। धीरे-धीरे पूरी दुनिया निजीकरण, भूमंडलीकरण और उदारीकरण की ओर बढ़ गयी । इसी रफ्तार से मजदूर संगठन भी कमजोर होते गए । समाज का जो सहानुभति और समर्थन ऐसे आंदोलनों को मिलता था वह भी जाता रहा । सरकारी विभागों की निंदा हर तरफ होने लगी कि यह भ्रष्ट और निकम्मे हैं । इसी अनुपात में मजदूर आन्दोलन के लिए भी राय बनी । निजी क्षेत्र में बेहतर सुविधा और तुरंत का काम लोगों को भाने लगा । यह नहीं देखा कि निजी कंपनिया वहां व्यापार कभी नहीं करेंगी, जहाँ पर घाटा होगा और उसके लिए तो केवल सरकारी विभाग और कम्पनियाँ ही हैं। समाजवादी और साम्यवादी मजदूर आन्दोलन दुनिया को दो वर्गों में ही देखा- एक मालिक और दूसरा मजदूर अर्थात सर्वहारा । जैसा समाज है वैसे मजदूर आन्दोलन नही चले और अंततः दलित और पिछड़ा मजदूर छोड़ता गया और काफी हद तक निष्क्रिय हुआ। वही मजदूर धरना और प्रदर्शन में वर्ग बन जाता है और समाज में जाति बन जाती है। चूँकि समाज में ही पला और बढ़ा और जीवन यापन भी ज्यादातर उसी में होता है तो वर्ग की मानसिकता जब अन्य मजदूरों के साथ अपने अधिकार मांगने की बात आती है तो कुछ समय के लिए उसी के अनुरुप हो जाती है और सारा समय जाति के बंधन में जिंदगी गुजारता है। जब वोट देने की बात आती है तो जाति के नेता दिखाई पड़ते है और उसकी लड़ाई लड़ने वाले संगठन और नेता भुला दिए जाते हैं। यह बात मजदूर आन्दोलन के नेता और समर्थक पार्टियाँ समझ नहीं सकी और अब तो देर बहुत हो गयी। सरकार ने भी लाभ कमाने के लिए प्रोत्साहित किया। ऐसी स्थिति बनती गयी कि विभाग और कम्पनियाँ घाटे में चले और दूसरी तरफ मजदूर कहे कि चाहे जो मजबूरी हो हमारी मांगे पूरी हो । जब सरकार मशीनरी से इसको समर्थन मिलने के बजाय विरोध हुआ तब मजदूर यूनियन इस स्थिति में भी नहीं रही कि उद्योग-धंधों को ठप्प कराकर मालिकों और सरकार को अपनी मांग मनवाने में सक्षम हो सके। हिन्द मजदूर किसान महापंचायत के शीर्ष नेता जार्ज फर्नांडिज ने मजदूरों के हितों में बड़ी लड़ियाँ लड़ी। इस यूनियन का बड़ा योगदान है। वर्तमान में उनके भाई माइकल फर्नांडिज एवं सुभाष मल्गी आदि के नेतृत्व में यह कारवां चल ही रहा है।

अन्य विशिष्ट अतिथि थे श्री जय नारायण चौकसे, कुलाधिपति, एल एन सी टी यूनिवर्सिटी, भोपाल ,डॉ दीपक जायसवाल, अध्यक्ष नेशनल फ्रंट ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियंस, श्री प्रदीप बनर्जी, अध्यक्ष तृणमूल कांग्रेस यूनियन आदि। अधिवेशन श्री माइकल फर्नांडिस, कार्यकारी अध्यक्ष, एच एम् के पी और श्री सुभाष मलगी , राष्ट्रीय महासचिव, एच एम् के पी के नेतृत्व में हुआ।

अधिवेशन में प्रतिनिधियों ने विभिन्न मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किये. इनमें मुख्य थे - एच एम के पी का एन एफ आई टी यू के साथ सम्बद्धता निश्चित करने के सम्बन्ध में, एच एम् के पी से सम्बद्ध पुराने संगठनों को वापस बुलाने के सम्बन्ध में, राष्ट्रीय आवास रिवॉल्विंग फंड, ट्रेड यूनियनों में भ्रष्टाचार आदि मुद्दों पर प्रस्ताव लाये गए, उन पर बहस कर पारित किये गए।

इस राष्ट्रीय अधिवेशन की मेजबानी एच एम् के पी से सम्बद्ध कोंकण रेलवे एम्प्लाइज यूनियन ने की। अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों एवं अतिथियों ने खुलकर उनके द्वारा की गयी तैयारियों की प्रशंसा की। कोंकण रेलवे एम्प्लाइज यूनियन का नेतृत्व श्री मोहन खेड़ेकर , महासचिव, श्री जयरामन नायर , कार्याध्यक्ष, उमेश गलवणकर, संगठन सचिव, एस बी पवार, अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों के नेतृत्व में अधिवेशन की सभी तैयारियां हुई। अधिवेशन को कोंकण रेलवे प्रबंधन का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री सत्या नारायण

श्री भानु पूनिया

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित रा ने दिल्ली परिसंघ इकाई की मीटिंग में श्री सत्या नारायण (987398894) को दिल्ली प्रदेश का अध्यक्ष व श्री भानु पूनिया (9013332151) को महासचिव नियुक्त किया। सभी पदाधिकारीयों ने इसके लिए डॉ. उदित राज का आभार व्यक्त किया और तालियां बजा कर अभिनन्दन किया।

For last six years, no Scheduled Caste judge sent to Supreme Court

None of the current high court chief justices belong to the Scheduled Caste, which comprises over 16 per cent of the country's population.

by Maneesh Chhibber

EVER SINCE former Chief Justice of India K G Balakrishnan retired on May 11, 2010, no judge belonging to the Scheduled Caste has been elevated to the Supreme Court. Also, none of the current high court chief justices belong to the Scheduled Caste, which comprises over 16 per cent of the country's population.

It is a similar story in the case of Scheduled Tribes as well.

Moreover, in the last 10 years, the Supreme Court collegium, which is tasked with recommending names for elevation to the apex court, has picked only three women candidates. Of these, two — Justice Gyan Sudha Misra and Justice Ranjana Prakash Desai — have since retired, while Justice R Banumathi remains in the Supreme Court.

The Supreme Court collegium comprises the Chief Justice of India and four senior-most judges. Data maintained by the Union Ministry of Law and Justice shows that the collegium has not followed any strict rule while elevating judges to the Supreme Court.

Earlier this month, three HC chief justices — A M Khanwilkar (Madhya Pradesh), D Y Chandrachud (Allahabad) and Ashok Bhushan (Kerala) — were elevated to the Supreme Court, on the recommendation of the collegium headed by CJI T S Thakur. As in the past, seniority was ignored.

The SC collegium ignored the claims of three current chief justices — L K Mohapatra of Manipur HC, D H Waghela of Bombay HC and Manjula Chellur of Calcutta HC — all of who are senior to the three chief justices who are now in the apex court.

The seniority of HC judges is calculated on an all-India basis, according to the date of their appointment. Manipur Chief Justice L K Mohapatra was appointed as a judge of the HC on September 16, 1999 and retires next month. Bombay HC Chief Justice D H Waghela is the next senior-most, having been appointed on September 17, 1999 — he retires on August 10. Calcutta HC Chief Justice Manjula Chellur became a judge on February 21, 2000 and retires on December 4, 2017. Both she and Waghela became HC chief justices before the three CJs who were elevated to the Supreme Court recently.

There is also no clarity on the rules and criteria, if any, that govern the collegium's decisions while making appointments to the Supreme Court.

The Memorandum of Procedure (MoP) of appointment of Supreme Court judges, which is still in force — work on the new MoP is currently on after the Supreme Court declared the National Judicial Appointments Commission (NJAC) Act as "unconstitutional and void" last October — makes no mention of any such criteria.

However, the law ministry's data throws up some interesting statistics.

In the current SC, eight HCs have no representation, while some are more represented than the rest.

The country's largest HC — Allahabad High Court, which has a sanctioned strength of 160 judges — has only two representatives — Justice R K Agrawal and Justice Ashok Bhushan — in the Supreme Court while Bombay, with a sanctioned strength of 94, has five.

Among the other high courts, Punjab and Haryana HC, which has a sanctioned strength of 85 judges, has two judges in the SC currently, while Madras, with a sanctioned strength of 75 judges, is represented by three judges in the Supreme Court.

Delhi, which has a sanctioned strength of 60 judges, is represented by three judges in the apex court, while Calcutta (sanctioned strength 58) has one and Madhya Pradesh (sanctioned strength 53) has two representatives.

Among larger HCs, Rajasthan, with a sanctioned strength of 50 judges, is not represented on the apex court bench. Jharkhand too does not have any judges in the apex court. However, Gauhati HC, with a sanctioned strength of 24 judges, has sent two to the Supreme Court. Chhattisgarh, Himachal Pradesh, Manipur, Tripura, Meghalaya and Sikkim are the other high courts which are not represented in the apex court.

Incidentally, for the next eight years, unless there is a major change due to an untimely death or resignation, the names of the successive CJIs are already clear. After CJI Thakur retires on January 3 next year, Justice Jagdish Singh Khehar is set to become the CJI. The next in line are Justice Dipak Misra, Justice Ranjan Gogoi, Justice Sharad Bobde, Justice N V Ramana, Justice U U Lalit and Justice D Y Chandrachud in that order.

During discussions in Parliament in August 2014 just before the MPs passed the NJAC Bill, there were questions about the inadequate representation of Scheduled Castes, Scheduled Tribes, Other Backward Classes and minorities in higher judiciary. There were also demands for reservations for these sections in the higher judiciary, which, however, didn't find favour with the government.

"It is an unfortunate situation. When I was CJI, we did try to elevate a Scheduled Caste HC C J (P D Dinakaran), but due to the controversy, it was stalled. I don't know if any names have been considered thereafter. There must be representation from the weaker sections, the caveat being that only the deserving should be brought," said Justice Balakrishnan.

http://indianexpress.com/article/india/india-news-india/for-last-six-years-no-scheduled-caste-judge-sent-to-supreme-court-shortage-pending-cases-2825216/

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 20 ● Issue 12 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● Total Pages 8 ● 1 to 15 May, 2017

Why India is Dirty ?

www.aiparisangh.com
facebook.com/AIParisangh
98 99 766 443
@aiparisangh
parisangh1997@gmail.com

Survey report for Swachch Bharat Abhiyan came on 4th may. Indore got the distinction to lead other cities in the survey followed by Bhopal. Not a single district from UP achieved cleanliness ranking under 50 other than Varanasi. UP got the distinction of contributing four of the most unclean cities. Purpose of the survey was to provide clear picture of developments in the sector of cleanliness, hygiene and sanitation under Swachch Bharat Abhiyan. The criteria for the survey included waste collection, segregation, recycling, disposal, prevalence of open defecation etc. Each metrics of survey were assigned certain points according to their importance in overall cleanliness. Points add upto total of 2000 points. 45% out of 2000 was allocated to open defecation free facilities, 30% points were given to response from citizens whereas rest 25% has been allocated to miscellaneous subjects. Self assessment by Municipalities have been given most important place in the survey. Survey team covered more than 17,500 locations, 2,582 community hubs and 2,560 economic centres to assess the cleanliness level across various cities.

On 2nd October, 2015, PM Modi gave a clarion call to clean all filths and dirts. Politicians, business man and officers came out in open with a broom in their hand to contribute to the mission. One positive contribution of this movement was to make this profession more dignified. However if we had a value based education system, it would not have come to a situation where PM himself would have to lead a mission for cleanliness drive. More than 70 years have passed since independence but the previous governments have never shed a thought to bring this cleanliness drive before. No effort had been made in the past before to change the mindset towards such profession, which have been considered as menial and undignified job in our society and those involved in cleaning activities have always been attributed to a lower social status. So called intellectuals of society like teachers, professors, writers, researchers and students hardly make a contribution in bringing cleanliness. If they had been so then the question of cleanliness would not have risen and PM could not have needed to start this mission. Education in India is limited to the purpose of getting a good job and respect in the society. Mind is treated like a box in the realm of education. One can put numerous information and statistics and mind can process them as per its need during exams and interviews. However a real education will be lacking till education does not humanises, sensitises and treats labor with dignity. Media plays one of the most important role in shaping the mentality of citizens. They could have easily moulded masses to create awareness towards hygiene and cleanliness but they couldn't.

The unhygienic and dirty environment is mainly attributed to our social stratified structure. In the caste hierarchy, there are thousand castes but the task of cleaning is assigned to one particular caste on the basis of birth and decent and that particular caste has been placed lowest in the hierarchy. This created a mindset that involving in such activities is not only undignified but will also dilute the education and knowledge possessed by one. Situation is so worse that people never consider once before littering waste at any place and believe that responsibility to clean resides with someone else.

Hon'ble PM started the mission and found support among upper strata too but the question is how to get society involved in the movement. Random photo ops of politicians and officers is good but involving masses in the drive to clean the nation is far more necessary. Education is one such medium through which masses can be taught to imbibe it like any other work which they pursue. Value based education makes understanding, thinking, not merely ensuring the degree and courses. Cleanliness is part of our life. so why not it should be made part of education curricula. If the rich and prosperous citizens would have given as much focus for cleaning drive as they give to their businesses, they might not have to go to foreign to enjoy such luxuries. Laurels and awards like Padmashri, Padmavibhushan and Padma Bhushan should be given in fields like sanitation, cleanliness, pollution control etc. School kids should be given training in cleanliness. Countries like Japan include cleanliness activities in their curriculum for school children. Children not only clean their utensils and tiffin boxes after their lunch but also sweep the floor, irrespective of their family's social status. Such arrangement can also be made in our country too. If cleanliness is imbibed in children from such tinder age, it will form part of their nature and would make them a responsible citizen later.

I am not a pessimist but when economic structure is being linked with caste, forms the stumbling block in this endeavour. End of caste system looks dismal in near future. Even if caste system continues, all efforts should be made to bring dignity, income and equality to this profession. Even if someone from other caste enters in such a profession, they use to hire someone from that particular caste to carry out work. Forced by the circumstances, some of so called upper caste take up this menial job but are ashamed to perform unless direct pressure is built on them from higher authorities. There are no solution to such problems at administrative and political level. Till the time, society as a whole do not shed this mentality, there is no hope for much improvement. Change of mindset is precondition to make the country litter and dirt free.

- Dr. Udit Raj

Judicial Overreach over the powers of Parliament

New Delhi: 13th May, 2017, Dr. UditRaj National Chairman of All India Parisangh for SC/STs expressed his views over Apex Court judgment for Kolkata High Court Justice CS Karnan. By preventing the posts and functions of justice c s karanan by Supreme Court it has created constitutional crisis . Without completing the legal proceedings , criminal contempt is slapped on him which even can't be done in case of ordinary citizens and what to talk about a judge who is protected from such actions and only parliament can do something. Thus Apex Court has created disturbance in the balance of power between Judiciary, Legislature and Executives. According to the article 214 and article 124 of the Indian Constitution, the power to impeach the judges of Supreme Court and High Courts reside with Parliament only. Earlier Apex Court took the power of appointment of judges from Parliament and now even the power to impeach is also being taken away. This has disturbed the balance between Judiciary, Executive and Legislature. If Justice Karnan would have been guilty, then Apex Court should have taken the procedures as described in the constitution. There is clear description of procedures in the constitution that should be followed. Even if Justice Karnan has made mistakes, the rights of Apex Court should have been limited to conducting investigation whereas power to impeach resides only with the Parliament.

Dr Udit Raj further added that issue is much larger than mere abrogating power of Parliament. Question arose that does Supreme Court will run the nation? This act of Supreme Court justifies why they(SC) is not accepting the conditions of Memorandum of Procedure (MOP) as suggested by Central Government. Even if Justice Karnan's behaviour was not upto the standards, the blame resides with the selection committee. Selection was done by collegium . There must have been improper evaluation of justice c s karnan by judges only and not by other functionaries.

National Chairman of All India Parisangh, Dr Udit Raj further said that only parliament has the rights to discuss character and conduct of judges from Supreme Court and High Court. This case can set a precedence for future which will surely demean the credibility of judiciary. In other words , this act itself will weaken the independence of judiciary. It is not right to give punishment to a criminal without proper investigation. Just like what happened in this case. If this precedent is followed then anyone can be punished for any act without follow of prescribed procedures. Apex Court self assumed that accused is the culprit and gave its judgment. Also preventing news to be leaked in media is also wrong.

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: parisangh1997@gmail.com Computer typesetting by C. L. Maurya